

शेर, गीदड और मूर्ख गधा-पंचतंत्र

एक घने जङ्गल में करालकेसर नाम का शेर रहता था । उसके साथ धूसरक नाम का गीदड भी सदा सेवाकार्य के लिए रहा करता था । शेर को एक बार एक मत हाथी से लड़ना पड़ा था, तब से उसके शरीर पर कई घाव हो गये थे । एक टाँग भी इस लड़ाई में टूट गई थी । उसके लिये एक कदम चलना भी कठिन हो गया था । जङ्गल में पशुओं का शिकार करना उसकी शक्ति से बाहर था । शिकार के बिना पेट नहीं भरता था । शेर और गीदड दोनों भूख से व्याकुल थे । एक दिन शेर ने गीदड से कहा--- "तू किसी शिकार की खोज कर के यहाँ ले आ; मैं पास में आए पशु की मार डालूँगा, फिर हम दोनों भर-पेट खाना खायेंगे ।"

गीदड शिकार की खोज में पास के गाँव में गया । वहाँ उसने तालाब के किनारे लम्बकर्ण नाम के गधे को हरी-हरी घास की कोमल कोंपलें खाते देखा । उसके पास जाकर बोला- "मामा ! नमस्कार । बड्डे दिनों बाद दिखाई दिये हो । इतने दुबले कैसे हो गये ?"

गधे ने उत्तर दिया - "भगिनीपुत्र ! क्या कहूँ ? धोबी बडी निर्दयता से मेरी पीठ पर बोझा रख देता है और एक कदम भी ढीला पडने पर लाठियों से मारता है । घास मुठ्ठीभर भी नहीं देता । स्वयं मुझे यहाँ आकर मिट्टी-मिली घास के तिनके खाने पडते हैं । इसीलिये दुबला होता जा रहा हूँ ।"

गीदड बोला- "मामा ! यही बात है तो मैं तुझे एक जगह ऐसी बतलाता हूँ, जहाँ मरकत-मणि के समान स्वच्छ हरी घास के मैदान हैं, निर्मल जल का जलाशय भी पास ही है । वहाँ आओ और हँसते-गाते जीवन व्यतीत करो ।"

लम्बकर्ण ने कहा- "बात तो ठीक है भगिनीपुत्र ! किन्तु हम देहाती पशु हैं, वन में जङ्गली जानवर मार कर खा जायेंगे । इसीलिये हम वन के हरे मैदानों का उपभोग नहीं कर सकते ।"

गीदड - "मामा ! ऐसा न कहो । वहाँ मेरा शासन है । मेरे रहते कोई तुम्हारा बाल भी बाँका नहीं कर सकता । तुम्हारी तरह कई गधों को मैंने धोबियों के अत्याचारों से मुक्ति दिलाई है

। इस समय भी वहाँ तीन गर्दभ-कन्यायें रहती हैं, जो अब जवान हो चुकी हैं । उन्होंने आते हुए मुझे कहा था कि तुम हमारी सच्ची माँ हो तो गाँव में जाकर हमारे लिये किसी गर्दभपति को लाओ । इसीलिए तो मैं तुम्हारे पास आया हूँ ।"

गीदड की बात सुनकर लम्बकर्ण ने गीदड के साथ चलने का निश्चय कर लिया । गीदड के पीछे-पीछे चलता हुआ वह उसी वनप्रदेश में आ पहुँचा जहाँ कई दिनों का भूखा शेर भोजन की प्रतीक्षा में बैठा था । शेर के उठते ही लम्बकर्ण ने भागना शुरू कर दिया । उसके भागते-भागते भी शेर ने पंजा लगा दिया । लेकिन लम्बकर्ण शेर के पंजे में नहीं फँसा, भाग ही गया ।

तब, गीदड ने शेर से कहा- "तुम्हारा पंजा बिल्कुल बेकार हो गया है । गधा भी उसके फन्दे से बच भागता है । क्या इसी बल पर तुम हाथी से लड़ते हो ?"

शेर ने जरा लज्जित होते हुए उत्तर दिया- " अभी मैंने अपना पंजा तैयार भी नहीं किया था । वह अचानक ही भाग गया । अन्यथा हाथी भी इस पंजे की मार से घायल हुए बिना भाग नहीं सकता ।"

गीदड बोला- "अच्छा ! तो अब एक बार और यत्न करके उसे तुम्हारे पास लाता हूँ । यह प्रहार खाली न जाये ।"

शेर - "जो गधा मुझे अपनी आँखों देख कर भागा है, वह अब कैसे आयगा ? किसी और पर घात लगाओ ।"

गीदड- "इन बातों में तुम दखल मत दो । तुम तो केवल तैयार होकर बैठ रहो ।"

गीदड ने देखा कि गधा उसी स्थान पर फिर घास चर रहा है ।

गीदड को देखकर गधे ने कहा- "भगिनीसुत ! तू भी मुझे खूब अच्छी जगह ले गया । एक क्षण और हो जाता तो जीवन से हाथ धोना पडता । भला, वह कौन सा जानवर था जो मुझे देख कर उठा था, और जिसका वज्रसमान हाथ मेरी पीठ पर पडा था ?"

तब हँसते हुए गीदड ने कहा- "मामा ! तुम भी विचित्र हो, गर्दभी तुम्हें देख कर आलिङ्गन करने उठी और तुम वहाँ से भाग आये । उसने तो तुम से प्रेम करने को हाथ उठाया था । वह तुम्हारे बिना जीवित नहीं रहेगी । भूखी-प्यासी मर जायगी । वह कहती है, यदि लम्बकर्ण मेरा पति नहीं होगा तो मैं आग में कूद पड़ूंगी ।

इसलिए अब उसे अधिक मत सताओ । अन्यथा स्त्री-हत्या का पाप तुम्हारे सिर लगेगा । चलो, मेरे साथ चलो ।"

गीदड की बात सुन कर गधा उसके साथ फिर जङ्गल की ओर चल दिया । वहाँ पहुँचते ही शेर उस पर टूट पडा । उसे मार कर शेर तालाब में स्नान करने गया । गीदड रखवाली करता रहा । शेर को जरा देर हो गई । भूख से व्याकुल गीदड ने गधे के कान और दिल के हिस्से काट कर खा लिये ।

शेर जब भजन-पूजन से वापस आया तो उसने देखा कि गधे के कान नहीं थे, और दिल भी निकला हुआ था । क्रोधित होकर उसने गीदड से कहा- "पापी ! तूने इसके कान और दिल खा कर इसे जूठा क्यों किया ?"

गीदड बोला- "स्वामी ! ऐसा न कहो । इसके कान और दिल थे ही नहीं, तभी तो यह एक बार जाकर भी वापस आ गया था ।"

शेर को गीदड की बात पर विश्वास हो गया । दोनों ने बाँट कर गधे का भोजन किया ।

अनुवाद - कुलदीप धर

मेर, गीदरु और भुक्त गण-पंढरुं

एक अने एए गल में कराल के भर नाम का मेर ररुता था।
उमके भाष प्रभरक नाम का गीदरु ही मर्रा मेर काट के लिए
ररु करुता था। मेर के एक गर एक भडु का घी में लरुना परु
था, उर में उमके मरीर पर करं आव के गये थे। एक ऐग ही उम
लरुनं में एए गरं थी। उमके लिये एक कदम उलना ही कठिन
के गया था। एए गल में पमुंठ का मिकार करना उमकी मक्ति
में गरुता था। मिकार के गिन पेट नहीं रुता था। मेर और
गीदरु दोनों रूप में वृकुल थे। एक दिन मेर ने गीदरु में कहा--
-"तु किभी मिकार की पिए कर के बरुन ले मु; मैं पाम में मुए
पमु की भार रुलीगा, द्रिर रुम दोनों रु-पेट पाना पावेंगे।"

गीदरु मिकार की पिए में पाम के गीव में गया। बरुन उमने
उलाठ के किनारे लभुकल नाम के गणे के रुरी-रुरी आम की
केभल केंपलें पाउं टोपा। उमके पाम एकर ठेला- "भाभा !
नभभूर। गरुतु दिनें गरु टोपारं दिवे के। उउने द्रुल के मे के
गये ?"

गणे ने उडुर दिया - "रुगिनीपुतु ! कृ करुं ? ऐमी रुनी निरुयता
में मेरी पी० पर मेरा राप टुतु है और एक कदम ही मीला
परुने पर लाठियें में भारुता है। आम भुलीरु ही नहीं टुतु। भुयं
भुए बरुन मुकर भिल्ली-भिली आम के टिनके पाने परुते है।
उमीलिये द्रुला केतु ए ररुता है।"

गीदरु ठेला- "भाभा ! बरुनी गरुतु है ते मैं तुए एक एगरु रिभी
गुलाता है, एकां भरकतु-भरु के मभान भुसू रुरी आम के

मैदान है, निम्नल एल का एलामघ ही पाभ की है। वहां मुठ
छर कैमते-गाते एीवन वृतीउ करे।"

लभुकल ने कहा- "गाते ठीक है रुगिनीपुत्र! किन्तु रुम टिकाती
पसु है, वन में एए गली एनवर भार कर पाए रखेंगे। अभीलिघे
रुम वन के करे मैदानें का उपहेग नहीं कर सकते।"

गीदरु - "भाभा! रिभा न कहे। वही मेरा माभन है। मेरे ररुते
कैरे दुभ्ररा गल ही गीका नहीं कर सकत। दुभ्ररी उररु करे
गएँ के मैने ऐगिधे के मृष्टाएारें मे भुक्ति मिलारें है। उभ भुभघ ही
वही तीन गरुड-कनृघे ररुती है, ऐ मर एवन के एकी है।
उनेंने मुते काए भुए कहा था कि दुभ रुभारी मझी भी केते गीव
में एकर रुभारे लिघे किभी गरुडपति के लाठ। अभीलिाए ते मै
दुभ्ररे पाभ मुघा है।"

गीदरु की गाते भुनकर लभुकल ने गीदरु के भाष एलने का
निम्नघ कर लिघा। गीदरु के पीके-पीके एलता रुमु वरु उभी
वनपुटिस में मु पकीगा एकी करे टिनें का रुपा मेर हेएन की
पुतीबा मैगैा था। मेर के उठते ही लभुकल ने हागना मुरु कर
दिया। उभके हागते-हागते ही मेर ने पंए लगा दिया। लेकिन
लभुकल मेर के पंए में नहीं टिभा, हाग की गघा।

उठ, गीदरु ने मेर मे कहा- "दुभ्ररा पंए विलुल गेकार के गघा
है। गण ही उभके टने मे गण हागता है। कृ अभी गल पर दुभ
काषी मे लरुते है?"

मेर ने एरा लल्लित केते काए उठुर दिया- "मसी मैने मपना पंए
टैयार ही नहीं किया था। वरु मपानक की हाग गघा। मृष्टा
काषी ही उभ पंए की भार मे आचल काए गिना हाग नहीं

भकडा ।"

गीदरु मैला- "मच्छा ! ते मम एक मर तर घडा न कर के उमे
डुभरै पाम लाडा के । वरु पूरार पाली न रवे ।"

मेर - "ए गण भूटे मपनी मुपे टोप कर हागा के, वरु मम केमे
मुयगा ? किभी तर पर आउ लगाड ।"

गीदरु- "उन माउं मे डुभ टापल भउ टे । डुभ ते केवल डैषार केकर
मै० रके ।"

गीदरु ने टोपा कि गण उभी मून पर टिर आम तर रका के ।

गीदरु के टोपकर गणे ने कका- "रुगिनीभउ ! डु ही भूटे एम
मच्छी एगरु ले गया । एक बल तर के रउ ते एीवन मे काष
पेन पडुडा । रुला, वरु केन मा एनवर घा ए भूटे टोप कर
उा घा, तर एिमका वएभभान काष मेरी पी० पर पडा घा
?"

उम केमडे का गीदरु ने कका- "भाभा ! डुभ ही विण्डु के,
गरुही डुभ टोप कर मुलिरगन करने उी तर डुभ वरु मे हाग
मुये । उमने ते डुभ मे पेम करने के काष उाघा घा । वरु डुभरै
गिन एीविउ नकीं रकेगी । सुपी-पूमी भर रवगी । वरु करुडी
के, वरि लभुकलु मेरा पडि नकीं केगा ते मै मुग मै कुद पडुगी ।

डमलिर मम उमे मणिक भउ मडाड । मनुषा मी-रुटु का पाप
डुभरै भिर लगेगा । एले, मेरे भाष एले ।"

गीदरु की माउ मुन कर गण उमके भाष टिर एए गल की तर

एल ढिष। वकीं पकींउते की मेर उम पर एए पर। उमे भर
कर मेर उलाग मे भान करने गय। गीरु रापवली करउ
रु। मेर के एर रेर के गरं। रुप मे वृकुल गीरु ने गणे के
कान उर ढिल के रिमेकाए कर णा लिबे।

मेर एर रुएन-पुएन मे वपम मुय ते उमने टोपा कि गणे के
कान नकीं घे, उर ढिल ही निकला रुमु घ। कैणित केकर
उमने गीरु मे करा- "पापी! तुने उमके कान उर ढिल णा
कर उमे एर कुं किय?"

गीरु मेला- "भाभी! रिभा न कडे। उमके कान उर ढिल घे की
नकीं, उही ते घर एक गर एकर ही वपम मु गय घ।"

मेर के गीरु की गउ पर रिमा वपम के गय। ऐने ने गीए कर
गणे का हेएन किय।

मनुवाए - कुलदीप एर